17

# चेले बनने की बुलाहट

## लूका 5:1-11, एक निकट दृष्टि

बाइबल में यीशु के अनुयायी के लिए इस्तेमाल होने वाला सबसे अधिक प्रचलित शब्द ''चेला'' ही है (मत्ती 5:1; 8:21, 23; 9:19; प्रेरितों 6:1, 2, 7; 9:1)। ''चेला'' एक यूनानी शब्द का अनुवाद है, जिसका अर्थ ''सीखने वाला, अनुयायी या शिष्य'' है।[1] सम्पूर्ण अर्थ में, चेला उसे कहते थे, जो गुरु के पीछे चलता था (मत्ती 16:24), गुरु से सीखता था (मत्ती 11:29), और गुरु की बातों को मानता था (यूहन्ना 8:31)। गुरु और चेले में निकट सम्बन्ध पाया जाता है। सच्चा चेला अपने गुरु जैसा ही बन जाता था (मत्ती 10:25क)।

''चेले बनने की बुलाहट'' पर इस प्रवचन के लिए पवित्र शास्त्र में से लूका 5:1-11 से लिया गया है,[2] जो उस अवसर के बारे में बताता है, जब यीशु ने पतरस और उसके मित्रों को बुलाया था। इस अध्ययन में, हम चेले बनने की कुछ शर्तों के बारे में जानेंगे।

### कुछ सीखना आवश्यक है (आयतें 1-3)

यदि आप यीशु का चेला बनना चाहते हैं, तो आपके लिए कुछ सीखना भी आवश्यक है। आपको प्रभु से निर्देश पाने के लिए हमेशा तैयार रहना आवश्यक है। कई लोगों की प्रवृत्ति यह होती है कि मैं सब कुछ जानता हूं और कहते हैं, ''*मुझे* कोई ज़्या सिखाएगा।'' जब तक आप सुनने और सीखने को तैयार नहीं हैं, तब तक आप मसीह के चेले नहीं बन सकते। पवित्र शास्त्र के इस हवाले में इसी बात का महत्व देखा जाएगा।

कहानी के आरम्भ में, यीशु गलील की झील के किनारे प्रचार कर रहा था।[3] नज़दीक ही शमौन पतरस था, जो अपनी नाव के पास जाल साफ़ कर रहा था। उसने और उसके साथियों ने सारी रात मछलियां पकड़ते हुए बिताई थी, परन्तु उनके हाथ मछली तो कोई नहीं लगी थी, पर वे थककर चूर हो गए थे और उनके जाल गंदे हो गए थे। मैं पतरस को देख सकता हूं, उसका सिर यीशु की बात सुनने के लिए एक ओर झुका हुआ है, जबकि उसकी उंगलियां जाल में से कीचड़ और घास आदि निकालने में व्यस्त हैं। यीशु से इस मछुआरे की यह पहली मुलाकात नहीं थी। वह यहूदिया में मसीह के साथ पहले भी गया था। परन्तु गलील के इलाके से वापस आने के बाद, वह अपने पुराने कारोबार में लग गया था।

यीशु का प्रचार सुनने के लिए लोग बढ़ते जा रहे थे। जिज्ञासु श्रोता मसीह की ओर बढ़

रहे थे, जिससे उसे झील के निकट और निकट जाना पड़ा, जब तक कि उसके जूते पानी में भीग नहीं गए। उसने पतरस की नाव ढूंढ़ी, उसमें बैठ गया और पतरस को नाव झील में ले चलने के लिए कहा। वहां उसने नाव को ही पुलपिट बना लिया।

आपको ज़्या लगता है कि नाव के बीच में पतरस ज़्या कर रहा था, ज़्या वह इसे थामकर बैठा हुआ था? वह कुछ सुन रहा था। ज़्या सुन रहा था? बाइबल की इस आयत में बताया गया है कि यीशु ''परमेश्वर का वचन'' सुना रहा था (आयत 1)। वचन का छात्र बने बिना आप प्रभु के चेले नहीं बन सकते। यीशु ने कहा, ''मेरा जुआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीज़ो। ज़्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे'' (मज़ी 11:29)। कुछ लोग जो चेले होने का दावा करते हैं, सालों बाद भी अज्ञानी रहते हैं, पर जब तक आप उसके लिखित वचन में पाई जाने वाली सच्चाइयों के गज़्भीर छात्र नहीं बन जाते, तब तक आप उसके चेले नहीं बन सकते!

## कुछ समझना आवश्यक है (आयतें 3-8)

अन्त में, यीशु ने अपना संदेश समाप्त किया। उसने भीड़ से अपनी बात पूरी कर दी थी, परन्तु पतरस के साथ नहीं। पतरस में बहुत क्षमता थी, परन्तु उसे अभी भी बहुत कुछ सीखना था। अब उसे अगला सबक मिलने वाला था। परज़्परा से अलग हटकर गुरु यीशु ने एक अप्रत्याशित बात की। उसने शमौन को आज्ञा दी, ''गहिरे में ले चल, और मछलियां पकड़ने के लिए अपने जाल डालो'' (आयत 4)।

शमौन गलील सागर (की झील) का बहुत अच्छा मछुआरा था। मछलियां पकड़ने का समय रात को ही था, जब मछलियां खाना खाने के लिए ऊपर आती हैं, न कि दिन का समय। मछलियां कम पानी वाली जगह में पकड़ी जानी थीं, न कि गहरे पानी में। इसके अलावा दस या इससे अधिक घण्टे कोशिश करने के बाद, या रात भर जाग कर कुछ हाथ न लगने पर नहीं, बल्कि पकड़ने के लिए मछलियां होने पर उसके प्रयास की प्रशंसा होनी चाहिए।

एक अनुभवी, परिश्रमी व सफल मछुआरे के रूप में शमौन के लिए किसी बढ़ई द्वारा (मरकुस 6:3) उसे मछलियां पकड़ने का ढंग बताना, कुछ तो शर्म की बात लगना स्वाभाविक ही था। (किसी साधारण आदमी द्वारा मुझे प्रचार करने का ढंग बताने पर मैं कई बार नाराज़ होने की भावना को स्वीकार करता हूं।) पतरस के उज़र से यही संकेत मिल सकता है: ''हे स्वामी, हम ने सारी रात मिहनत की और कुछ न पकड़ा; ... ।'' (आयत 5क)।

परन्तु उससे अगले शज़्द पर ध्यान दें: ''तौ भी।'' ''... तेरे कहने से जाल डालूंगा'' (आयत 5)। मुझे यहां ''तौ भी'' शज़्द का इस्तेमाल अच्छा लगता है। अन्य शज़्दों में, ''हम सारी रात लगे रहे पर कोई मछली नहीं पकड़ी ... *तौ भी* ... यदि *आप* कहते हैं तो मैं कोशिश करके देखता हूं। इससे मछली पकड़ने का मेरा एक दशक से अधिक का अनुभव बेकार जाएगा, परन्तु मैं आपकी बात ज़रूर *मानूंगा*।''

पतरस का ऐसा व्यवहार कैसे बन गया? इसका उज़र उस शीर्षक में मिलता है, जिससे उसने यीशु को सज्बोधित किया: ''हे स्वामी।'' मूल शास्त्र में, ''स्वामी'' या ''प्रभु'' के लिए यह सामान्य शज़्द नहीं है।[4] यह लूका द्वारा इस्तेमाल किया गया एक विशेष शज़्द है, जो केवल यीशु पर ही लागू होता है (लूका 8:24, 45; 9:33, 49; 17:13)। यह एक मिश्रित यूनानी शज़्द है, जो ''ऊपर'' के साथ ''खड़ा'' के लिए शज़्द को मिलाता है। इसका अर्थ ''जो ऊपर खड़ा है'' है-जिसे किसी दूसरे पर पूरा अधिकार है। पतरस यीशु की आज्ञा से सहमत हुआ या नहीं, यह महत्व देने वाली बात नहीं है। यीशु प्रभु था, और पतरस उसका दास, जिस कारण वह उसकी आज्ञा मानने को तैयार था।

यदि हमें यीशु के चेले बनना है, तो हमारे लिए कुछ समझना आवश्यक है और वह यह है कि वह *प्रभु* है। प्रभु को हम नहीं, बल्कि वह हमें निर्देश देता है। हम उसे नहीं बताते कि ज़्या करे और ज़्या न करे बल्कि वह हमें बताता है कि हमें ज़्या करना है। ''स्वामी'' एक मज़बूत शज़्द है। स्वामी सुझाव नहीं देते अर्थात वे सलाह नहीं, बल्कि *आज्ञाएं* देते हैं और आज्ञाओं को बिना सवाल किए मानना आवश्यक है।

गहरे जल में नाव ले जाते समय शायद पतरस को लगा कि वह मूर्ख है। जाल फैंकते हुए उसे कुछ घबराहट हुई होगी। हो सकता है कि उसने किनारे पर दूसरे मछुआरों की हंसी सुनी हो।[5] *फिर भी* उसने वही किया जो उसके स्वामी अर्थात प्रभु ने कहा था।

प्रभु ने इस आज्ञापालन का प्रतिफल कैसे दिया? कुछ ही देर बाद पतरस को लगा कि जाल की रस्सियां खिंच रही हैं और वह अपने सहायकों के साथ जाल खींचने लगा जो मछलियों से पूरी तरह भर गए थे। मछलियां जालों में भर आई थीं, उनकी पूछें पानी पर थपेड़े मार रही थीं। उनके जालों को नाव में खींचने से जाल की मज़बूत रस्सियां टूटने लगी थीं। जल्दी से उन्होंने किनारे पर अपने साथियों को इशारा किया कि आकर उनकी सहायता करें।

याकूब और यूहन्ना मछली पकड़ने वाली अपनी नाव ले आए। जल्दी ही दोनों नावें, फिसलने वाली मछलियों से भर गईं, इतनी भर गईं कि नावें डूबने लगीं।[6] ये दस से पन्द्रह फुट लज़्बी नावें नहीं थीं, जो हमने देखी हैं। ये गलील की झील पर मछलियां पकड़ने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली व्यावसायिक नावें थीं। अनुभवी मछुआरों ने कभी इतनी मछलियां पकड़ते किसी को नहीं देखा था!

पतरस और अन्य मछुआरों के लिए यह कितना शानदार प्रकाशन रहा होगा! बेशक विषय मछलियां पकड़ना ही है, परन्तु हमारा प्रभु जानता है कि वह ज़्या संदेश दे रहा है!

अधिकतर समय, प्रभु की आज्ञाएं हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, परन्तु इस बात की कोई गारन्टी नहीं है कि हम हमेशा उसकी बात मानेंगे ही।[7] प्रश्न यह नहीं है कि ''ज़्या यह मेरे लिए तर्कसंगत है?'' बल्कि यह है कि ''ज़्या मसीह ने मुझसे यही करने को कहा है?'' यदि ऐसा है तो हम पतरस की तरह उज़र दें, ''आप जैसा कहें मैं वैसे ही करूंगा।'' यदि हम आज्ञा मानते हैं, तो अन्त में हमें पता चलेगा कि प्रभु का मार्ग ही सही है!

यदि यीशु के चेले बनना है, तो आप में यह विश्वास होना आवश्यक है कि वह हर चीज़ का स्वामी या प्रभु है और उस विश्वास पर कार्य करना।

## कुछ मानना आवश्यक है (आयतें 8-10क)

पतरस ने यीशु को कुछ प्रभावशाली आश्चर्यकर्म करते हुए देखा था। उसने उसे पानी का दाखरस बनाते हुए देखा था (यूहन्ना 2:1-11)। उसने उसे एक अधिकारी के पुत्र को चंगा करते भी देखा था (यूहन्ना 4:46-54)। मसीह को बहुत से दूसरे चिह्न और अचज़्भे करते हुए देखने के लिए वह वहीं था (देखें यूहन्ना 2:23; 3:2), परन्तु उनमें से किसी भी आश्चर्यकर्म ने उसे इतना प्रभावित नहीं किया था, जितना इस ने। यह आश्चर्यकर्म शमौन के व्यवसाय से जुड़ा था; इसमें उसके जीवन के ढंग को सज़्बोधित किया गया था। इससे वह यह देख पाया कि यीशु *हर चीज़* का प्रभु है।

नये प्रकाश में से यीशु को देखने पर पतरस ने अपने आप को भी नये प्रकाश में देखा। उसे अचानक अपनी कमियां दिखाई देने लगीं। वह ''यीशु के पांवों पर गिरा''-मछलियों के ढेर में नीचे, और कहने लगा, ''हे प्रभु, मेरे पास से जा, ज़्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं'' (आयत 8)। उसकी प्रतिक्रिया वैसी ही थी जैसी परमेश्वर की सामर्थ और महिमा के सामने होने पर आम लोगों की होती है (उत्पज़ि 18:27; अय्यूब 42:4; यशायाह 6:5)।

यदि यीशु के चेले बनना हो, तो आपको दो सच्चाइयां माननी ही पड़ेंगी: पहली, आपको यह मानना होगा कि *वह* सब कुछ है। देखें कि पतरस ने अपने पापी होने की बात मान लेने पर यीशु से ज़्या कहा था: उसने उसे ''प्रभु'' कहा था। पौलुस ने कहा कि यदि उद्धार पाना हो, तो तुज़्हारे लिए ''यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार'' करना आवश्यक है (रोमियों 10:9)। दूसरा, यह स्वीकार करके कि वह सब कुछ है, आप यह मानते हैं कि *आप* कुछ नहीं हैं। आपके लिए आवश्यक है कि उसे अपनी आवश्यकता मानें।

''अपने आप से भरे''[8] व्यज़्ति के मन में प्रभु के लिए कोई जगह नहीं है। यीशु उन लोगों का इस्तेमाल नहीं कर सकता जो कहते हैं, ''प्रभु, देख मैं कितना अच्छा हूं! देख मैं कितना चतुर, कुशल और सफल हूं! आशा है कि आप मुझे शाबाशी देंगे कि मैं किस प्रकार काम कर सकता हूं!'' मसीह केवल उन्हीं लोगों का इस्तेमाल कर सकता है, जो अपनी कमज़ोरियों को मानते हुए उस पर अपनी निर्भरता को दिखाते और उसके कदमों में झुकते हैं। किसी दूसरे के शज़्दों से लें तो आपको कुछ कहने के लिए तैयार रहना चाहिए, ''हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कर'' (लूका 18:13ख)।

## कुछ परिवर्तन आवश्यक है (आयत 10ख)

जब पतरस ने उसे और यीशु को अलग करने वाली खाई को देखा, तो उसने कहा, ''मेरे पास से जा'' (आयत 8)। अच्छा है कि यीशु ने उसकी विनती स्वीकार नहीं की, बल्कि एक विशेष चुनौती देकर उसने उसे अपने और नज़दीक कर लिया। ''मत डर: अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा'' (आयत 10ख)। ''पकड़ा करेगा'' शज़्द वर्तमानकाल में है, जो निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। यह एक ही समय में किया जाने वाला साहसिक कार्य नहीं, बल्कि जीवन भर चलने वाला काम था । इसके अलावा यूनानी शज़्द का अनुवाद ''पकड़ा करेगा'' का मूल अर्थ ''जीवित पकड़ना'' है।[9] उन्होंने मनुष्यों को यीशु

के पास लाना था, जो ''जगत को जीवन देता है'' (यूहन्ना 6:33)। मत्ती उसकी बुलाहट को इस प्रकार लिखता है: ''मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा'' (4:19; देखें मरकुस 1:17)।

पतरस को अपने जीवन को फिर से एकाग्र करने की चुनौती मिली थी। उसने मछलियों को पकड़ने में ही ध्यान लगाया था: अब उसे अपना ध्यान मनुष्यों को पकड़ने पर लगाना था।

यीशु किसानों से राज्य का बीज बोने के लिए कहता है (वचन; लूका 8:11)।[10] यीशु व्यापारियों से ''बहुमूल्य मोती'' (मत्ती 13:46; सुसमाचार) की बात लोगों को बताने के लिए कहता है। यीशु अपने घर को बड़ा करने के लिए बढ़इयों को बुलाता है (कलीसिया; देखें मत्ती 16:18; 1 तीमुथियुस 3:15)। यीशु डॉक्टरों से आत्माओं की चंगाई के लिए महान डॉक्टर के साथ मिलकर काम करने को कहता है (यूहन्ना 12:40)। जीवन में आपका जो भी कार्य या रुचि हो, यदि आप यीशु के चेले होंगे, तो आप अपने जीवन को अवश्य नये सिरे से एकाग्र करेंगे। जब आप अपने जीवन का केंद्र बदल लेते हैं तो आपकी प्राथमिकताएं भी बदल जाएंगी।

मेरे एक मित्र, ज़्लॉयड शुबर्ट की स्कूल का सामान उपलब्ध कराने वाली एक सफल कंपनी थी। उसके मेज़ पर, यह लिखा होता था: ''मेरा काम परमेश्वर की सेवा करना है। बिल चुकाने के लिए मैं पैंसिलें बेचता हूं।''

## कुछ त्यागना आवश्यक है (आयत 11)

जैसे मैंने पहले ध्यान दिलाया था, पतरस यीशु के साथ पहले से ही जाता था। उसके मित्र भी जाते थे। अब यीशु उन्हें शिष्यता के एक नये स्तर अर्थात पूर्णकालिक रूप से उसके पीछे चलने के लिए बुला रहा था।[11] इसके लिए उन्हें अपनी नावों, जालों और मछलियों को छोड़ना आवश्यक था। उन्हें उन चीज़ों को छोड़ना आवश्यक था, जो उनके लिए कभी महत्वपूर्ण हुआ करती थीं। उन्हें पक्की कमाई और आर्थिक लाभ छोड़ना पड़ना था।

हर संकेत से पता चलता है कि इन लोगों का मछलियां पकड़ने का अच्छा खासा कारोबार था। हमने पहले ही देखा है कि इन सभी भागीदारों की मछलियां पकड़ने वाली एक से अधिक नावें थीं। याकूब और यूहन्ना भाड़े पर मज़दूर रखते थे (मरकुस 1:20)। याकूब और यूहन्ना की माता उन स्त्रियों में से एक थी, जो बाद में यीशु और उसके चेलों की आर्थिक सहायता करती थी (मत्ती 27:55, 56; लूका 8:3)। यूहन्ना महायाजक का परिचित था (यूहन्ना 18:15); उसका और उसके परिवार का धार्मिक अधिकारियों के साथ कारोबारी लेन-देन रहा होगा। परन्तु अब उसे ऊंची कमाई वाला कारोबार छोड़ना पड़ना था।

यह तो बहुत अधिक मांग थी, परन्तु स्पष्टतया इन लोगों ने यह नहीं सोचा कि बहुत अधिक मांगा जा रहा है। आयत 11 में हम पढ़ते हैं, ''और वे नावों को किनारे पर ले आए

और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।'' मरकुस हमें बताता है कि परतस और उसका भाई अन्द्रियास ''तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए'' (1:18), और याकूब और यूहन्ना ''अपने पिता जज़्दी को मज़दूरों के साथ नाव पर छोड़कर उसके पीछे हो लिए'' (आयत 20)।

मुझे कुछ विरोध सुनाई दिया है, ''परन्तु निश्चय ही प्रभु हर चेले से ऐसा नहीं चाहता।'' लूका 14 अध्याय में यीशु ने भावी अनुयायियों के एक समूह के बारे में कहा था, ''इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता'' (आयत 33)। कई प्रीचर ट्रेनिंग स्कूलों के साथ काम करने के कारण, मैं बहुत से ऐसे लोगों को जानता हूं, जिन्होंने लाभदायक कारोबार और ऊंचे वेतन वाले काम छोड़ दिए-जिन्होंने परमेश्वर के वचन को सिज़ाने और प्रचार करने की शिक्षा पाने के लिए स्कूल में प्रवेश के लिए अपना सब कुछ बेच डाला।

विरोध करने वाले यह भी कहते हैं, ''पर आप उन लोगों के बारे में ज़्या कहते हो, जिनकी पूर्णकालिक प्रचारक बनने की कोई योजना नहीं है?'' फिर भी ''कुछ छोड़ने'' को तैयार होना आवश्यक है, ज़्योंकि आपके और सज़्पूर्ण मन से प्रभु की सेवा करने के बीच आने वाली किसी भी रुकावट को छोड़ना आवश्यक है।[12] मज़ी 16:24 में यीशु ने ज़ोर दिया, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो *अपने आप का इनकार करे* और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।''

हर हाल में प्रभु पर भरोसा रखने के लिए तैयार होना भी आवश्यक है। पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना गलील सागर से दूर यीशु के पीछे चलते हुए, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसी पर भरोसा रख रहे थे, जब उसने मछलियां उपलज़्ध करवाईं। कई बार हम प्रभु पर वैसे भरोसा नहीं रखते, जैसे हमें रखना चाहिए। मैं ऐसे लोगों को जानता हूं, जो कहते हैं, ''मसीही बनने से पहले जो मेरा कारोबार था यदि मैं उसको छोड़ दूं तो मैं कभी जीविका नहीं कमा सकूंगा! मेरा परिवार भूखा मर जाएगा।'' यीशु ने वायदा किया था कि यदि हम उसे और उसके मार्ग को प्राथमिकता देते हैं, तो वह जीवन की आवश्यकताओं को अवश्य पूरा करेगा (मज़ी 6:33)। पौलुस ने लिखा है, ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुज़्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा'' (फिलिप्पियों 4:19)।[13]

एक बार पतरस ने यीशु से कहा था, ''देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं'' (मरकुस 10:28)। फिर यीशु ने उसे यह आश्वासन दिया था:

> मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं, जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या लड़के-बालों या खेतों को छोड़ दिया हो। और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़के-बालों और खेतों को। पर उपद्रव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन (आयतें 29, 30)।

मसीह का चेला बनने के लिए आप चाहे कितना ज़ी त्याग करें, वह प्रभु के त्याग से अधिक नहीं हो सकता।

## कुछ किया जाना आवश्यक है (आयत 11)

यीशु का चेला बनने की एक अन्तिम शर्त की बात करना आवश्यक है। यह स्पष्ट शर्त ''चेला'' शब्द में मिलती है, और वचन में इसे हमने पहले भी देखा है, परन्तु इसका उल्लेख किया जाना भी आवश्यक है: कुछ *करना* आवश्यक है। विशेषकर उसके *पीछे चलना* आवश्यक है। बाइबल की हमारी यह आयत कहती है कि पतरस और दूसरे ''सब कुछ छोड़कर उसके *पीछे हो लिए*'' (आयत 11)। मत्ती और मरकुस ज़ोर देते हैं कि चारों आदमियों ने अपनी नावें और जाल वहीं छोड़ दिए ''और उसके *पीछे हो लिए*'' (मत्ती 4:20, 22; मरकुस 1:18, 20)। यीशु ने कहा, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो ... अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले'' (मत्ती 16:24)।

पतरस और दूसरे लोगों के लिए यीशु के पीछे चलना आसान नहीं था। चेलों को यीशु के पीछे चलने के लिए थकान, शत्रुता और अन्त में मृत्यु का सामना करना पड़ा। फिर भी वे अन्त तक यीशु के प्रति समर्पित रहे। जहां भी वह उन्हें भेजना चाहता था, वे मसीह के पीछे गए।[14]

आप में से कुछ लोग अभी यीशु के चेले नहीं बने हैं। यह विश्वास करना आवश्यक है कि यीशु आपके लिए मरा, वह आप को पापों से उद्धार दिला सकता है। मसीह ने (मैंने नहीं) कहा कि, ''... यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही [अर्थात मसीहा] हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)। उद्धार पाने के लिए, प्रभु की [मेरी नहीं] आज्ञा है कि उसमें विश्वास लाकर बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लें (मरकुस 16:16; देखें मत्ती 28:18)। मसीही बन जाने पर, आपको जीवनभर उसके पीछे चलना आवश्यक है। वह ''तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो'' (1 पतरस 2:21)। यह हमेशा आसान नहीं होगा (प्रेरितों 14:22), परन्तु उसका चेला बनने के लिए ''कम से कम शर्त'' यही है!

## सारांश

हमने चेला बनने की कई शर्तों को देखा है।

कुछ सीखना आवश्यक है: वचन के छात्र बनना आवश्यक है।

कुछ समझना आवश्यक है: यह समझना आवश्यक है कि यीशु हमारे जीवन का प्रभु है।

कुछ मानना आवश्यक है: अपनी निर्बलताओं और मसीह पर अपनी निर्भरता को मानना आवश्यक है।

कुछ परिवर्तन आवश्यक है: अपने जीवनों की निष्ठा को बदलना आवश्यक है। हमारा जीवन प्रभु की महिमा करने और दूसरों को उसके पास लाने के लिए हो।

कुछ त्यागना आवश्यक है: सम्पूर्ण मन से सेवा करने में किसी भी रुकावट को दूर करने के लिए तैयार रहना और प्रभु पर भरोसा रखना आवश्यक है।

कुछ करना आवश्यक है: हमें उसके पीछे चलने को तैयार रहना चाहिए, चाहे वह हमें कहीं भी भेजना चाहे।

उसका चेला बनने के लिए जो कुछ चाहिए, ज़्या वह आपके पास है ?[15]

---

टिप्पणियां

[1]यूनानी शज्द *-tes* के साथ समाप्त होने वाले ''सीखना'' के लिए शज्द का एक मिश्रण है, जिससे ''जो'' का संकेत मिलता है। [2]चाहें तो आप कह सकते हैं, ''चेला बनना सीखने के लिए हम कई पड़ावों से गुजर सकते हैं।'' आप पिछले पद में दिए गए कुछ पदों के साथ यूहन्ना 13:35 और यूहन्ना 15:8 जैसे पदों को पढ़ या उद्धृत कर सकते हैं। फिर आप इसमें जोड़ सकते हैं, ''परन्तु, हम अपने पाठ के लिए लूका 5:1-11 पर ध्यान रखेंगे।'' [3]लूका में ''गन्नेसरत की झील'' है, जो गलील सागर का एक और नाम है। इस पुस्तक में आगे ''गलील सागर'' पर लेख देखें। [4]आयत 8 में यीशु को सज़्बोधित करने के लिए इसी शज़्द का इस्तेमाल किया गया है। [5]समुद्र में सैकड़ों मछुआरे मछलियां पकड़ते थे। [6]आयत 7 कहती है कि नावें ''डूबने लगीं,'' परन्तु वास्तव में वे डूबी नहीं थीं। हो सकता है कि मछुआरों ने बोझ फिर से बांट लिया हो या कोई और प्रबन्ध किया हो। [7]आप ईश्वरीय आज्ञाओं के कुछ उदाहरण दे सकते हैं, जिनका कोई अर्थ नहीं था, उदाहरण के लिए, यरीहो की दीवारों के इर्द-गिर्द घूमना या यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाना। कुछ लोगों को डुबकी के रूप में बपतिस्मा, सप्ताह के हर पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेने की अनिवार्यता तर्कहीन लगती है। [8]''अपने आप में'' यह एक ऐसी अभिव्यज़्ति है, जिसका अर्थ ''घमण्डपूर्ण'' है। मेरे विचार से ज़्योंकि यह अपनी व्याज़्या स्वयं करता है इसलिए आप इससे मिलती-जुलती अभिव्यज़्ति का इस्तेमाल कर सकते हैं, जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [9]मेरी इंटरलीनियर बाइबल में यूनानी का मूल अनुवाद यह है: ''तुम मनुष्यों को जीवित लेने वाले बनोगे।'' [10]जहां मैं रहता हूं वहां मैं कई सामान्य कार्यों की सूची बनाता हूं। संसार के जिस भाग में आप रहते हैं, वहां के कार्यों को ले लें।

[11]''गलील के उज़र में'' पाठ में चेले बनने के चरणों पर चर्चा देखें। [12]आप मज़ी 18:8, 9 की मज़बूत शिक्षा शामिल कर सकते हैं (मज़ी 5:29, 30 भी देखें)। यह पद अपने आप को लंगड़ा-लूला करने की शिक्षा नहीं देता बल्कि यह सिद्धान्त सिखाता है कि किसी भी ऐसी चीज़ को जो परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने का कारण बने ''काट डालना'' (उससे पीछा छुड़ाना आवश्यक है)। [13]इन पंज़्तियों को लिखते हुए भी, मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मुझ पर ऐसी कोई परीक्षा नहीं पड़ी जैसी दूसरे देशों में रहने वाले कुछ मसीहियों पर पड़ती है। यीशु के पीछे चलने के लिए, उन्हें मूलत: ऐसी हर चीज़ छोड़नी पड़नी थी, जो उनके लिए कीमती थी। यीशु के चेले बनने के लिए, वे निर्धनता और/या भुखमरी के कगार पर रहते थे। मेरा मन इनके लिए रोता है, और मैं केवल यही कह सकता हूं, ''दूसरों के लिए अच्छा उदाहरण पेश करने के लिए परमेश्वर आपको आशीष दे!'' [14]मैं प्रेरितों की कमियों और इस तथ्य से अवगत हूं कि यीशु के पीछे चलने के लिए सब बातों में उनकी समझ बढ़नी थी। फिर भी अन्तिम परिणाम वही था जो इस वाज़्य में कहा गया है। [15]इस प्रवचन का इस्तेमाल करते हुए अपने सुनने वालों को प्रोत्साहित करें कि चेलों के रूप में जो भी करना आवश्यक है, वह करें। पाठ के अन्तिम मुज़्य प्वायंट के अन्तिम पैरे को विस्तार दें।